

## प्रारंभिक परीक्षा

### भारत के चमगादड़ों की स्थिति (SOIBATS) 2024-25 रिपोर्ट

#### संदर्भ

भारत के चमगादड़ों की स्थिति (SoIbats) 2024–25 रिपोर्ट, नेचर कंजर्वेशन फाउंडेशन (NCF) और बैट कंजर्वेशन इंटरनेशनल (BCI) की एक संयुक्त पहल है। यह देश में चमगादड़ों का पहला व्यापक राष्ट्रीय स्तर का मूल्यांकन है।

#### मुख्य निष्कर्ष

- भारत में वर्तमान में चमगादड़ों की 135 मान्यता प्राप्त प्रजातियां पाई जाती हैं।
- प्रजातियों की विविधता का उच्चतम स्तर पश्चिम बंगाल (68 प्रजातियां) और मेघालय (66 प्रजातियां) में केंद्रित है।
- **संरक्षण स्थिति:** जबकि कई प्रजातियां स्थिर हैं, 7 प्रजातियों को IUCN द्वारा "लुप्तप्राय" (Threatened) के रूप में सूचीबद्ध किया गया है, और 16 प्रजातियां भारतीय उपमहाद्वीप के लिए स्थानिक (endemic) हैं।
- यद्यपि प्राकृतिक गुफाएं और पुराने पेड़ प्राथमिक आवास हैं, चमगादड़ तेजी से शहरी परिवेश के अनुकूल हो रहे हैं, स्मारकों, पुराने घरों में लकड़ी की कड़ियों और परित्यक्त इमारतों का उपयोग कर रहे हैं।

#### भारत के चमगादड़

भारत की चमगादड़ आबादी को दो व्यापक कार्यात्मक समूहों में विभाजित किया गया है: बड़े फलभक्षी चमगादड़ (मेगाचिरोप्टेरा) और छोटे, कीटभक्षी चमगादड़ (माइक्रोचिरोप्टेरा)।

- **कोलार लीफ-नोज़्ड बैट:** यह "गंभीर रूप से लुप्तप्राय" प्रजाति कर्नाटक की केवल एक गुफा में पाई जाती है, जो इसे दुनिया के सबसे दुर्लभ स्तनधारियों में से एक बनाती है।
- **सलीम अली फ्रूट बैट:** पश्चिमी घाट की एक दुर्लभ स्थानिक प्रजाति, जिसका नाम भारत के प्रसिद्ध "बर्डमैन" के नाम पर रखा गया है।
- **द्वीपीय स्थानिक प्रजातियां:** अंडमान हॉर्सशू बैट और निकोबार फ्लाइंग फॉक्स भारत के द्वीपीय क्षेत्रों तक सीमित अद्वितीय विकासवादी वंशावली का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- **विशाल भारतीय फ्लाइंग फॉक्स:** विश्व के सबसे बड़े चमगादड़ों में से एक, जो मुख्य भूमि के शहरी क्षेत्रों में वृक्षों की छतरी (canopy) पर अक्सर देखा जाता है।

#### चमगादड़ के बारे में

- **गण (Order):** चिरोप्टेरा (एकमात्र स्तनधारी जो पूरी तरह से उड़ने में सक्षम हैं)।
- **पारिस्थितिक भूमिका**
  - **परागण और बीज प्रकीर्णन:** फलभक्षी चमगादड़ कई आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण पौधों के प्राथमिक परागणकर्ता हैं और बीज प्रकीर्णन के माध्यम से कुछ उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में लगभग 40% वन पुनरुद्धार के लिए जिम्मेदार हैं।
  - **प्राकृतिक कीट नियंत्रण:** कीटभक्षी चमगादड़ जैविक कीटनाशकों के रूप में कार्य करते हैं, जो भारी मात्रा में कीटों (मच्छरों और फसलों को नुकसान पहुंचाने वाले पतंगों सहित) का सेवन करते हैं, जिससे रासायनिक उर्वरकों की आवश्यकता कम हो जाती है।
  - **उर्वरक के रूप में गुआनो:** चमगादड़ का मल (गुआनो) नाइट्रोजन और फास्फोरस से भरपूर होता है, जो गुफाओं और जंगलों की मिट्टी के स्वास्थ्य के लिए उच्च गुणवत्ता वाले प्राकृतिक उर्वरक के रूप में कार्य करता है।
- **खतरे और चिंताएं**
  - **आवास विखंडन:** खनन (विशेष रूप से मेघालय की चूना पत्थर की गुफाओं में) और बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के लिए पुराने पेड़ों की कटाई प्राथमिक बसेरों (roosting sites) को नष्ट कर रही है।

- **ज़ूनोटिक कलंक:** COVID-19 महामारी के बाद से, सार्वजनिक भय के कारण चमगादड़ों को बढ़ते उत्पीड़न का सामना करना पड़ा है। रिपोर्ट स्पष्ट करती है कि चमगादड़ 5.2 करोड़ वर्षों से विभिन्न वायरस के साथ सह-अस्तित्व में रहे हैं; स्पिलओवर (विषाणु प्रसार) की घटनाएं केवल तभी होती हैं जब मनुष्य उनके आवासों में अतिक्रमण या हस्तक्षेप करते हैं।
- **रासायनिक विषाक्तता:** कीटनाशकों का अत्यधिक उपयोग उनके खाद्य स्रोत को कम करता है और चमगादड़ आबादी के भीतर विषाक्त पदार्थों के जैव-संचयन (bioaccumulation) का कारण बनता है।
- **शहरी कुप्रबंधन:** विरासत स्मारकों जैसे "मानव निर्मित" बसेरों के लिए संरक्षण की कमी के कारण अक्सर नवीनीकरण के दौरान बस्तियों को धुएं से बाहर निकाल दिया जाता है या बेदखल कर दिया जाता है।

## सिजीमाली बॉक्साइट संघर्ष

### संदर्भ

ओडिशा में सिजीमाली बॉक्साइट ब्लॉक तीव्र संघर्ष का स्थल बन गया है क्योंकि कोंध जनजातीय समुदाय भूमि अधिग्रहण और सड़क निर्माण का विरोध कर रहे हैं।

### सिजीमाली हिल के बारे में

- **स्थान:** ओडिशा के रायगढ़ा और कालाहांडी जिलों की सीमा पर स्थित है।
- **पारिस्थितिक क्षेत्र:** पूर्वी घाट के केंद्र में स्थित है, एक ऐसा क्षेत्र जिसकी पारिस्थितिक संवेदनशीलता की तुलना अक्सर अरावली से की जाती है।
- **बॉक्साइट भंडार:** पहाड़ी में 31.1 करोड़ टन बॉक्साइट होने का अनुमान है। ओडिशा के पास भारत के बॉक्साइट भंडार का 51% हिस्सा है, जो इस क्षेत्र को भारत का "एल्युमिनियम हब" बनाता है।

### बॉक्साइट के बारे में

- **विशेषताएं**
  - अलौह धात्विक खनिज।
  - एल्युमिनियम का मुख्य अयस्क।
  - सामान्यतः लाल-भूरे, सफेद, भूरे या पीले रंग का।
  - मुख्य रूप से हाइड्रेटेड एल्युमिनियम ऑक्साइड (गिब्सिट, बोहेमाइट, डायस्पोर) से निर्मित।
  - हल्का, कम घनत्व लेकिन उच्च शक्ति (एल्युमिनियम निष्कर्षण के माध्यम से)।
  - उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय जलवायु में तीव्र रासायनिक अपक्षय (लैटेराइटिकरण) द्वारा निर्मित।
  - अवशिष्ट निक्षेपों (residual deposits) के रूप में पाया जाता है, जो शिराओं या लोड्स से संबद्ध नहीं होता।
  - आमतौर पर पठारों, उच्च भूमियों और पहाड़ियों की चोटियों पर पाया जाता है।
- **उपयोग**
  - एल्युमिनियम का उपयोग परिवहन, निर्माण, पैकेजिंग में किया जाता है।
  - विद्युत पारेषण लाइनें और केबल।
  - विमान, ऑटोमोबाइल, जहाज और रेल कोच (हल्की धातु)।
  - पैकेजिंग उद्योग (कैन, फॉयल)।
  - रक्षा, एयरोस्पेस और नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र।
  - एलुमिना का उपयोग रिफ़्रेक्टरीज, अपघर्षक (abrasives), सीमेंट और रसायनों में किया जाता है।
- **विश्व का सबसे बड़ा उत्पादक:** गिनी।

### भारत में बॉक्साइट का वितरण

राज्य	प्रमुख बेल्ट / जिले / खदानें
ओडिशा (सबसे बड़ा उत्पादक)	कोरापुट, कालाहांडी, रायगढ़ा, पंचपतमली (दमनजोड़ी)
गुजरात	कच्छ, जामनगर, भावनगर

झारखंड	लोहरदगा पठार
महाराष्ट्र	कोल्हापुर; रत्नागिरी; सतारा
छत्तीसगढ़	सरगुजा; बिलासपुर; बस्तर
मध्य प्रदेश	अमरकंटक; मंडला; शहडोल
आंध्र प्रदेश	पूर्वी घाट (विशाखापत्तनम, पूर्वी गोदावरी)
तमिलनाडु	सलेम; नीलगिरी (सीमित भंडार)

**तथ्य**

1. **नियमगिरि मिसाल (2013):** भारत का पहला "पर्यावरण जनमत संग्रह" जहाँ ग्राम सभाओं ने जनजातीय धार्मिक अधिकारों (डोंगरिया कोंध) का हवाला देते हुए खनन को खारिज कर दिया था।
2. **कोंध जनजाति:** ओडिशा के पहाड़ी इलाकों में रहने वाले विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह (PVTGs) और अन्य अनुसूचित जनजातियाँ।

## भारत में महिलाओं के प्रतिनिधित्व पर रुझान

**संदर्भ**

भारत में महिलाओं का प्रतिनिधित्व सीमित बना हुआ है, संसद और राज्य विधानसभाओं में भागीदारी निरंतर लैंगिक असमानताओं को दर्शाती है। ये रुझान भारत की निम्न वैश्विक स्थिति को भी रेखांकित करते हैं और आरक्षण या कोटा जैसे संरचनात्मक सुधारों की तत्काल आवश्यकता पर बल देते हैं।

**हाल के रुझान**

**संघ स्तर**

- भारतीय विधायिकाओं में महिलाओं का प्रतिनिधित्व लगातार कम रहा है, जो शायद ही कभी 15% को पार करता है।
- लोकसभा में, प्रतिनिधित्व 4.9% (1951-52) से बढ़कर लगभग 13.6% (2024-29) हो गया और इसका उच्चतम स्तर 14.36% (2019-24) था; न्यूनतम 3.5% (1977-79) रहा।
- राज्यसभा में महिलाएं लगभग 16% हैं, जो लोकसभा की तुलना में थोड़ी अधिक है लेकिन फिर भी समानता से दूर है।

**राज्य विधानसभाएं**

- **असमान प्रतिनिधित्व**
  - राज्य विधानसभाओं में महिलाओं की भागीदारी कम और अत्यधिक असमान है।
  - केवल छत्तीसगढ़ (21.1%) ने 15% को पार कर लिया है, जो इसे एक अपवाद बनाता है।
- **अपेक्षाकृत बेहतर प्रदर्शन करने वाले राज्य:**
  - त्रिपुरा (15%)
  - झारखंड (14.8%)
  - हरियाणा (14.4%)
  - पश्चिम बंगाल (13.6%)
- **सबसे कम प्रतिनिधित्व:**
  - नागालैंड, पुडुचेरी (~3.3%)
  - नागालैंड ने पहली बार 2023 में महिला विधायक चुनी
- **व्यापक अंतराल:**
  - 19 विधानसभाओं में 10 फीसदी से भी कम महिला विधायक
  - प्रमुख राज्यों में गुजरात, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, असम, कर्नाटक शामिल हैं

### वैश्विक तुलना: भारत की स्थिति

- निचले सदनों में महिलाओं के प्रतिनिधित्व के मामले में भारत वैश्विक स्तर पर 147वें स्थान पर है (IPU, 2026)।
- यह वैश्विक मानकों की तुलना में एक महत्वपूर्ण अंतराल को दर्शाता है।
- **उच्च प्रतिनिधित्व वाले देश (50%+):**
  - रवांडा, क्यूबा, निकारागुआ
  - मेक्सिको, बोलीविया, कोस्टा रिका
  - संयुक्त अरब अमीरात, अंडोरा
- **वैश्विक रुझान:**
  - 11.3% (1995) से बढ़कर 27.2% (2025) हो गया
  - हाल के वर्षों में विकास धीमा हो गया है

### उच्च प्रतिनिधित्व के प्रमुख चालक

- बेहतर प्रदर्शन करने वाले देश सामान्य विशेषताओं को साझा करते हैं:
  - विधायी लैंगिक कोटा
  - आनुपातिक या मिश्रित निर्वाचन प्रणाली
  - लिंग के प्रति संवेदनशील संसदीय प्रथाएं
  - राजनीति में महिलाओं के खिलाफ हिंसा पर अंकुश लगाने के उपाय
- **डेटा अंतर्दृष्टि:**
  - कोटा वाले देश: 31.2% महिलाओं का प्रतिनिधित्व
  - कोटा के बिना: 16.8%

### सुधार की आवश्यकता

- भारत में कोटा जैसे मजबूत संस्थागत तंत्र का अभाव है।
- संसद और विधानसभाओं में 33 प्रतिशत आरक्षण जैसे प्रस्तावित सुधार अभी भी रुके हुए हैं।
- प्रतिनिधित्व में सुधार के लिए आवश्यक है:
  - पार्टियों की राजनीतिक इच्छाशक्ति
  - संस्थागत सुधार (कोटा, चुनावी परिवर्तन)
  - लैंगिक बाधाओं को कम करने के लिए सामाजिक परिवर्तन

### महिला आरक्षण में देरी नहीं की जा सकती

#### संदर्भ

131वें संवैधानिक संशोधन विधेयक (अप्रैल 2026) की अस्वीकृति ने विधानसभाओं में महिला आरक्षण को लागू करने की तत्काल आवश्यकता पर बहस को फिर से तेज कर दिया है।

#### मुख्य डेटा

- **संसद बनाम राज्य:** जनसंख्या का लगभग आधा होने के बावजूद, महिलाओं की संख्या संसद में केवल 14–15% और राज्य विधानसभाओं में लगभग 9% है।
- **उच्च मतदाता भागीदारी:** कई राज्यों में महिलाओं का मतदान पुरुषों के बराबर या उससे अधिक है, जो मजबूत राजनीतिक जुड़ाव को दर्शाता है।

- **स्थानीय शासन की सफलता:** पंचायती राज संस्थाओं में आरक्षण (33-50%) से स्वास्थ्य, स्वच्छता और कल्याण पर बेहतर ध्यान दिया गया है।
- **वैश्विक तुलना:** भारत का प्रतिनिधित्व अंतरराष्ट्रीय लोकतांत्रिक मानकों से बहुत नीचे है।

#### तत्काल कार्रवाई के कारण

- **संरचनात्मक असमानता को पाटना:** दलों के स्वैच्छिक प्रयासों ने काम नहीं किया है और प्रणालीगत बहिष्कार के लिए प्रणालीगत समाधानों की आवश्यकता है।
- **बेहतर नीतिगत परिणाम:** महिला नेता शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और सामाजिक कल्याण को प्राथमिकता देती हैं।
- **रोल मॉडल प्रभाव:** सत्ता में महिलाओं की अधिक दृश्यता भविष्य के नेतृत्व को प्रोत्साहित करती है।
- **लोकतांत्रिक वैधता:** एक लोकतंत्र को अपनी जनसंख्या का प्रतिबिंब होना चाहिए; अल्प-प्रतिनिधित्व इसकी विश्वसनीयता को कमजोर करता है।
- **बढ़ती आकांक्षाएं:** शिक्षा और नौकरियों में महिलाओं की बढ़ती संख्या के साथ, प्रतिनिधित्व में देरी से अलगाव और हताशा का जोखिम बढ़ जाता है।

#### 106वां संविधान संशोधन (2023)

- **निम्नलिखित में महिलाओं के लिए 33% आरक्षण का प्रावधान करता है:**
  - संसद
  - राज्य विधानसभाएँ
  - दिल्ली विधानसभा
- **इसमें शामिल हैं:**
  - 15 वर्ष की अवधि (विस्तार योग्य)
  - अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति महिलाओं के लिए उप-कोटा
  - आरक्षित सीटों का चक्रीय आवंटन
- **कार्यान्वयन की शर्त:** अगली जनगणना के बाद परिसीमन से जुड़ा हुआ, जिससे इसका क्रियान्वयन विलंबित हो गया है।

#### आरक्षण में देरी के जोखिम

- **प्रतिनिधित्व का बढ़ता अंतर:** 2027 की जनगणना के बाद स्थगन महिलाओं को 2029 के चुनावों से बाहर कर सकता है।
- **निरंतर पुरुष वर्चस्व:** दल निहित पूर्वाग्रहों के कारण कम महिलाओं को नामांकित करना जारी रख सकते हैं।
- **नीतिगत दृष्टिहीनता:** सुरक्षा, स्वास्थ्य और कल्याण जैसे प्रमुख क्षेत्रों में पर्याप्त महिला दृष्टिकोण का अभाव है।
- **लोकतंत्र का कमजोर होना:** प्रतिनिधित्व के बिना भागीदारी लोकतांत्रिक गहराई को सीमित करती है।
- **आर्थिक लागत:** नेतृत्व से महिलाओं को बाहर करने से शासन दक्षता और विकास के परिणाम कम हो जाते हैं।

#### आगे की राह

- **जनगणना लिंकेज हटाना:** परिसीमन की प्रतीक्षा किए बिना आरक्षण लागू करने के लिए कानूनी विकल्पों का पता लगाएं।
- **नेतृत्व पाइपलाइन का निर्माण:** भविष्य की महिला नेताओं को प्रशिक्षित करने के लिए स्वयं सहायता समूहों (SHGs) और जमीनी स्तर के नेटवर्क का उपयोग करना।
- **दलीय सुधार:** टिकट वितरण में आंतरिक कोटा को प्रोत्साहित करना।
- **सहायता तंत्र:** महिला उम्मीदवारों के लिए वित्तीय और संस्थागत सहायता प्रदान करना।
- **सार्वजनिक सहमति:** महिला आरक्षण को किसी दलीय मुद्दे के बजाय राष्ट्रीय प्राथमिकता के रूप में प्रस्तुत करना।